उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा

विषय

सामान्य हिन्दी

सविस्तृत

MADE EASY Publications

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.

Corporate Office: 44-A/4, Kalu Sarai (Near Hauz Khas Metro Station), New Delhi-110016
E-mail: infomep@madeeasy.in
Contact: 9021300500
Visit us at: www.madeeasypublications.org

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा)
विषय : सामान्य हिन्दी

© Copyright, by MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise), without the prior written permission of the above mentioned publisher of this book.

प्रथम संस्करण : 2020
द्वितीय संस्करण : 2021
तृतीय संस्करण : 2022
पुनर्मुद्रण : 2023

MADE EASY Publications Pvt. Ltd. has take due care in collecting the data and providing the solutions, before publishing this book. Inspite of this, if any inaccuracy or printing error occurs then MADE EASY PUBLICATIONS owes no responsibility. MADE EASY PUBLICATIONS will be grateful if you could point out any such error. Your suggestions will be appreciated.

© All rights reserved by MADE EASY PUBLICATIONS Pvt. Ltd. No part of this book may be reproduced or utilized in any form without the written permission from the publisher.

प्रस्तावना

B. Singh (Ex. IES)

अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं, खासकर राजकीय लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में हिन्दी विषय का विशेष स्थान है। यह विषय हमेशा से अभ्यथियों को इन परीक्षाओं में सफलता दिलाने में सहायक रहा है।

यह सामान्य हिन्दी पुस्तिका उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC) (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2021) को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में इस परीक्षा के पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं का समावेश करते हुए इसके प्रत्येक प्रकरण को सरल एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें संधि, समास, उपसर्ग, पर्यायवाची-विलोम शब्द, शब्द-शुद्धि, वाक्य-शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, सहित व्याकरण के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी शामिल किया गया है।

यह पुस्तक स्वयं में सम्पूर्ण है और हिन्दी की परीक्षा की दृष्टि से यह ध्यान रखा गया है कि इसमें सभी आवश्यक तथ्यों को शामिल किया जाए।

हमें आशा और विश्वास है कि यह पुस्तिका अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी। पुस्तक की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए आपका बहुमुल्य सुझाव आमंत्रित है।

शुभकामनाओं सहित धन्यवाद

B. Singh

CMD, MADE EASY Group

विषय-सूची

सामान्य हिन्दी

अध्याय 1 हिन्दीः एक संक्षिप्त परिचय 1

भाषा 1
हिन्दी भाषा का विकास 1
वर्ण का स्वरूप 2
हिन्दी के स्वरवर्ण 3
हिन्दी के व्यंजनवर्ण 3
विराम चिन्ह 4
विराम चिन्ह के भेद 4
शब्द रचना 5
व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द भेद 6
विकारी शब्द 6
संज्ञा 6
संज्ञा के भेद 6
संज्ञा के रूपांतर 7
सर्वनाम 8
विशेषण 9
क्रिया 9
काल 10
अविकारी शब्द 11
समुच्चयबोधक 11
क्रियाविशेषण 11
सम्बन्धबोधक 12
विस्मयादिबोधक 12
वाक्य रचना 12
वाक्यांश 12
वाक्य के भेद 12
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 14

अध्याय 2 संधि 17

संधि 17
स्वर संधि 17
दीर्घ संधि 17
गुण संधि 18
वृद्धि संधि 19
यण् संधि 19
अयादि संधि 20
व्यंजन संधि 20
विसर्ग संधि 22
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 23

अध्याय 3 समास 27

समास....27
समास के प्रकार....27
अव्ययीभाव समास....27
तत्पुरुष समास....28
उपपद तत्पुरुष....28
लुप्तपद तत्पुरुष....29
नञ् समास....29
द्विगु समास....29
कर्मधारक समास....30
द्वन्द्व समास....30
बहुब्रीहि समास....31
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....23

अध्याय 4 उपसर्ग एवं प्रत्यय 35

उपसर्ग....35
उपसर्ग के प्रकार....35
संस्कृत के उपसर्ग....35
हिन्दी के उपसर्ग....36
विदेशी उपसर्ग....37
प्रत्यय....38
प्रत्यय के प्रकार....38
कृदन्त प्रत्यय....39
तद्धित प्रत्यय....39
उर्दू के प्रत्यय....40
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....41

अध्याय 5 पर्यायवाची एवं विलोम शब्द 45

पर्यायवाची शब्द....45
विलोम शब्द....48
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....56

अध्याय 6 लिंग, वचन एवं कारक 57

लिंग....57
लिंग के प्रकार....57
पुल्लिंग....60
पुल्लिंग शब्द की पहचान....60
स्त्रीलिंग....60
स्त्रीलिंग शब्द की पहचान....60
वचन....60
कारक....62
कारक-चिन्ह स्मरण करने के लिए सूत्र....62
कारक के भेद....62
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....68

अध्याय 7 अनेकार्थी शब्द 67

अनेकार्थी शब्द....67
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....72

अध्याय 8 वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 75

वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द.....75
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष.....79

अध्याय 9 शब्द युग्मों का अर्थ भेद 83

शब्द युग्मों का अर्थ भेद.....83
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष.....89

अध्याय 10 शब्द शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि 93

शब्द शुद्धि.....93
वाक्य अशुद्धि.....102
अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि.....102
अनुपयुक्त शब्द के कारण.....102
लिंग सम्बन्धी.....103
वचन सम्बन्धी.....103
क्रमभंग सम्बन्धी.....103
कारक सम्बन्धी.....103
सर्वनाम सम्बन्धी.....104
क्रिया सम्बन्धी.....105
मुहावरे के कारण.....105
संयोजक शब्द सम्बन्धी.....105
अशुद्ध वर्तनी के कारण.....105
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष.....106

अध्याय 11 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 109

मुहावरे.....109
मुहावरे की विशेषताएं.....109
लोकोक्ति.....116
लोकोक्ति शब्द का अर्थ.....116
मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर.....116
समानता.....116
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष.....122

अध्याय 12 तत्सम, तदभव, देशज एवं विदेशज शब्द 127

तत्सम शब्द.....127
तद्भव शब्द.....127
देशज शब्द.....130
अरबी शब्द.....131
फारसी शब्द.....132
तुर्की शब्द.....132
पुर्तगाली शब्द.....132
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष.....133

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 1..... **137 – 142**

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 2..... **143 – 148**

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 3..... **149 – 154**

अध्याय 1

हिन्दी: एक संक्षिप्त परिचय

भाषा

''भाषा'' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है। इसका अर्थ वाणी को व्यक्त करना है। इसके द्वारा मनुष्य के भावों, विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

भाषा की प्रकृति

भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। इस तरह वाक्य, शब्द और मूल ध्वनियाँ ही भाषा के अंग हैं। व्याकरण में इन्हीं के अंग–प्रत्यंगों का अध्ययन–विवेचन होता है। अतएव, व्याकरण भाषा पर आश्रित है।

भाषा के विविध रूप

हर देश में भाषा के तीन रूप मिलते हैं –

1. बोलियाँ
2. परिनिष्ठित भाषा
3. राष्ट्रभाषा

बोली

जिन स्थानीय भाषाओं का प्रयोग साधारण जनता अपने समूह या घरों में करती है, उसे बोली (dialect) कहते हैं। किसी भी देश में बोलियों की संख्या अनेक होती हैं। भारत में लगभग 600 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। ये अपने–आप जन्म लेती हैं और किसी क्षेत्र–विशेष में बोली जाती हैं। जैसेः भोजपुरी, मगही, ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली, आदि।

परिनिष्ठित भाषा

परिनिष्ठित भाषा व्याकरण से नियंत्रित होती हैं। इसका प्रयोग शिक्षा, शासन और साहित्य में होता है। किसी बोली को जब व्याकरण से परिष्कृत किया जाता है, तब वह परिनिष्ठित भाषा बन जाती है।

राष्ट्रभाषा

जब भाषा व्यापक शक्ति ग्रहण कर लेती है, तब आगे चलकर राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के आधार पर राजभाषा या राष्ट्रभाषा का स्थान पा लेती है। ऐसी भाषा सभी सीमाओं को लाँघकर अधिक व्यापक और विस्तृत क्षेत्र में विचार–विनिमय का साधन बनकर सारे देश की भावात्मक एकता में सहायक होती है।

हिन्दी भाषा का विकास

1100 ई. के आसपास आधुनिक भाषाओं का युग आरंभ हुआ। 14वीं शताब्दी से आधुनिक भाषाओं का स्पष्ट रूप सामने आया। कुछ समय तक अपभ्रंश की प्रवृत्तियाँ आधुनिक भाषाओं में मिली–जुली रहीं, फिर धीरे–धीरे भाषा–परिवर्तन के इस संक्रांतिकाल में 'संदेशरासक', 'प्राकृतपैंगलम्', उक्ति–व्यक्ति–प्रकरण', 'वर्णरत्नाकर', 'कीर्तिलता', तथा 'ज्ञानेश्वरी' जैसे कुछ ग्रंथों की रचना हुई, जिनके अध्ययन से अपभ्रंश से प्रभावित 'पुरानी हिंदी' के कुछ रूप देखे जा सकते हैं। इस काल की भाषा को कुछ लोगों ने 'अवहट्ट' नाम से संबोधित किया है। इस काल के कवि ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति और वंशीधर ने तत्कालीन भाषा को 'अवहट्ट' की संज्ञा दी है।

इस प्रकार अपभ्रंश के विभिन्न रूपों से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई। ये सभी भाषाएँ सरलता की ओर हैं। मध्यकाल में हिन्दी अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की तरह अपने अस्तित्व में आ चुकी थी। भाषा के रूप में हिन्दी की प्रकृति रचनात्मक है।

हिंदी की मूल उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश (पश्चिमी हिंदी) से मानी गई है। हिंदी के अंतर्गत उसके ये रूप प्रचलित हैं–

पश्चिमी हिंदी – ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, खड़ीबोली, बाँगरू और राजस्थानी

पूर्वी हिंदी – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, बिहारी

पहाड़ी प्रदेश की बोलियाँ – कुमाऊँनी, गढ़वाली

हिंदी में अनेक उपबोलियों के रहते हुए भी खड़ीबोली ही उसकी मूल भाषा बन गई जो पिछले दो सौ वर्षों से विकसित होती रही है। इसकी समृद्धि में इसकी सभी बोलियाँ योगदान करती रही हैं और इस प्रकार यह देश के कोने–कोने में फैलती गई। जॉन बीम्स ने आधुनिक आर्यभाषाओं में हिंदी को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उन्होंने उत्तर भारत तथा मध्य भारत को हिंदी का मुख्य क्षेत्र बताते हुए लिखा है कि या तो हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं, किंतु उसका एक सर्वमान्य व्यापक रूप भी है, जिसका विकास दिल्ली के आसपास के क्षेत्र में हुआ था और जो सर्वत्र शिक्षितों के द्वारा एक रूप से (खड़ीबोली) बोली और समझी जाती है। बीम्स ने हिंदी के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए यह भी लिखा है कि हिंदी संस्कृत की वास्तविक उत्तराधिकारिणी है और आधुनिक युग में इसका अन्यान्य भाषाओं में वही स्थान है, जो प्राचीनकाल में संस्कृत का था।

वर्ण का स्वरूप

वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसका खंड न हो, जैसे–अ, ई, व, च, क, इत्यादि।

उदाहरण : 'पानी' शब्द की दो ध्वनियाँ हैं– 'पा' और 'नी'। इनके भी चार खंड हैं– प् + आ, न् + ई। इसके बाद इन चार ध्वनियों के टुकड़े नहीं किए जा सकते, इसलिए ये मूल ध्वनियाँ वर्ण या अक्षर हैं।

वर्ण हमारी उच्चरित भाषा या वाणी की सबसे छोटी इकाई है। इन्हीं इकाइयों को मिलाकर शब्दसमूह और वाक्यों की रचना होती है। मूलतः हिंदी में 52 वर्ण हैं। वर्षों के उच्चारण–समूह को वर्णमाला (alphabet) कहते हैं।

वर्ण तालिका

- स्वर
  - ह्रस्व: अ, इ, उ, ऋ (4)
  - दीर्घ: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (7)
- व्यंजन
  - स्पर्श: कवर्ग से पवर्ग तथा ड़, ढ़ (25+2)=27
  - अंतःस्थ: य, र, ल, व (4)
  - ऊष्म: श, ष, स, ह (4)
  - आगत: ज़, फ़ (2)
  - संयुक्त: क्ष, त्र, ज्ञ, श्र (4)

स्वर की संख्या (11) + व्यंजन की संख्या (41) = 52

स्वर–	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ		
व्यंजन–	क वर्ग	:	क, ख, ग, घ, ङ
	च वर्ग	:	च, छ, ज, झ, ञ
	ट वर्ग	:	ट, ठ, ड, ढ, ण
	त वर्ग	:	त, थ, द, ध, न
	प वर्ग	:	प, फ, ब, भ, म
अंतःस्थ		:	य, र, ल, व
ऊष्म		:	श, ष, स, ह
संयुक्त व्यंजन		:	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
द्विगुण व्यंजन		:	ड़, ढ़
विदेशी (आगत) व्यंजन		:	ज़, फ़
अनुस्वार (ं),			विसर्ग (:)

हिन्दी के स्वरवर्ण

स्वर उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्न–बाधा के होता है। इनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती। इनके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख से निर्बाध रूप से निकलती है। सामान्यतः इसके उच्चारण में कंठ, तालु का प्रयोग होता है, जीभ, होंठ का नहीं। पर, उ, ऊ के उच्चारण में होठों का प्रयोग होता है। हिंदी में स्वरवर्णो की संख्या ग्यारह है, जिनका वर्गीकरण इस प्रकार है–

(i) ह्रस्व स्वर : अ, इ, उ, ऋ

(ii) दीर्घ स्वर : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

वर्ण नाम	उच्चारण स्थान	स्वर वर्ण
कंठ्य	कंठ	अ, आ, अँ, आँ
तालव्य	तालु (मुँह के भीतर की छत का पिछला भाग)	इ, ई, इँ
मूर्धन्य	मूर्धा (मुँह के भीतर की छत का अगला भाग)	ऋ
	कंठ + तालु (कंठतालव्य)	ए, ऐ
	ओष्ठ + कंठ (कंठोष्ठय)	ओ, औ
ओष्ठ्य	ओष्ठ/ओंठ	उ, ऊ

हिन्दी के व्यंजनवर्ण

व्यंजनवर्ण वे हैं जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण संभव नहीं। जैसे– क् + अ = क, ख् + अ = ख।

व्यंजन वह ध्वनि है, जिसके उच्चारण में भीतर से आती हुई वायु मुख में कहीं–न–कहीं, किसी–न–किसी रूप में बाधित होती है। स्वरवर्ण स्वतंत्र और व्यंजनवर्ण स्वर पर आश्रित हैं। इनकी निम्नलिखित मुख्य श्रेणियाँ हैं –

1. स्पर्श 2. अंतःस्थ 3. ऊष्म

स्पर्श व्यंजन:

ये कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श से बोले जाते हैं। इसी से इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन्हें हम 'वर्गीय व्यंजन' भी कहते हैं, क्योंकि ये उच्चारण–स्थान की अलग–अलग एकता लिए हुए वर्गों में विभक्त हैं। इस जाति के पाँच–पाँच व्यंजनों के पाँच वर्ग बना लिए गए हैं। उदाहरणार्थ–

1. क वर्ग – क, ख, ग, घ, ङ (कंठ से)
2. च वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
3. ट वर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्द्धा से)
4. त वर्ग – त, थ, द, ध, न (दंत से)
5. प वर्ग – प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

अंतःस्थ व्यंजन चार हैं – य, र, ल, व। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओठों के परस्पर सटाने से होता है, किंतु कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता। अतः, ये चारों अंतस्थ व्यंजन 'अर्द्धस्वर' कहलाते हैं।

ऊष्म व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है। ये चार हैं – श, ष, स, ह।

वर्ण नाम	उच्चारण स्थान	व्यंजन वर्ण
कंठ्य	कंठ	क, ख, ग, घ, ङ
तालव्य	तालु (मुँह के भीतर की छत का पिछला भाग)	च, छ, ज, ज़, झ, ञ
मूर्धन्य	मूर्धा (मुंह के भीतर की छत का अगला भाग)	ट, ठ, ड, ढ, ढ़, ण
दंत्य	ऊपरी दाँतों के निकट से	त, थ, द, ध, न
ओष्ठ्य	दोनों ओठों से	प, फ, फ़, ब, भ, म
तालव्य	तालु (मुँह के भीतर की छत का अगला भाग)	श, य
वर्त्स्य	दंत + मसूड़ा (दंत मूल से)	स, र, ल
दंत्योष्ठ्य	ऊपर के दाँत निचला ओंठ	व
मूर्धन्य	मूर्धा (भीतर की छत का अगला भाग)	ष
स्वरयंत्रीय	स्वर यंत्र (कंठ के भीतर स्थित)	ह
उत्क्षिप्तं	जिनके उच्चारण में जीभ ऊपर उठकर झटके के साथ नीचे को आये	ड़, ढ़

महाप्राण व्यंजन:

ये वो व्यंजन होते हैं जिन्हें मुख में वायु–प्रवाह के साथ बोला जाता है।

जैसे : कि 'ख, घ, झ और फ'।

अल्पप्राण व्यंजन:

ये वो व्यंजन होते हैं जिन्हें बहुत कम वायु–प्रवाह से बोला जाता है।

जैसे : कि 'क, ग, ज और प'।

संक्षेप प्रश्नोत्तर

हिंदी में मूलतः वर्णों की संख्या कितनी है?	52
'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?	क् + ष्
'क' वर्ण उच्चारण की दृष्टि से क्या है?	कंठ्य
वह ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं हो सकते, उसे क्या कहते हैं?	वर्ण
हिंदी वर्णमाला में स्वरों की कुल संख्या कितनी है?	11
हिंदी वर्णमाला में व्यंजनों की कुल संख्या कितनी है?	41
'ए' 'ऐ' वर्ण क्या कहलाते हैं?	कंठतालव्य
हिंदी की 'श' ध्वनि है –	तालव्य
य, र, ल, व किस प्रकार के व्यंजन हैं?	अन्तःस्थ

विराम चिन्ह

विराम का अर्थ है 'ठहराव या रुकना'। जिस तरह हम काम करते समय बीच–बीच में रुकते और फिर आगे बढ़ते हैं, वैसे ही लेखन में भी विराम की आवश्यकता होती है, अतः पाठक के मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए भाषा में विरामों का उपयोग आवश्यक है।

विराम चिन्ह के भेद

प्रमुख विराम चिन्ह निम्नलिखित हैं –

- अल्प विराम (,)
- अर्द्ध विराम (;)
- पूर्ण विराम (।)
- दीर्घ उच्चारण चिह्न (ऽ)
- टीका सूचक (', +, +, 2)
- समाप्ति सूचक (–0–, –––)
- उप विराम (अपूर्ण विराम) (:)
- प्रश्न चिह्न (?)
- कोष्ठक ( ) [ ] { }
- लाघव चिह्न (0)
- पाद बिन्दु (÷)
- तुल्यता सूचक (=)
- अवतरण चिह्न, उद्धरण चिह्न (' ')
- निर्देशक चिह्न, संयोजक चिह्न, सामासिक चिह्न (–)
- पुनरुक्तिसूचक चिह्न (")
- विवरण चिह्न (:–)
- पाद चिह्न (–)
- हंसपद या त्रुटिबोधक (^)
- लोप चिह्न (....., + + + +)
- आश्चर्य चिह्न, विस्मयादि चिह्न (!)

संक्षेप प्रश्नोत्तर

अल्प विराम का चिन्ह है –	,
अर्द्ध विराम का चिन्ह है –	;
हंस पद किस विराम का एक और नाम है?	त्रुटि विराम
पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है –	वाक्य के अंत में
उप विराम चिन्ह है –	:
किस विराम चिन्ह का प्रयोग सर्वाधिक होता है?	अल्प विराम (,)
संक्षिप्त रूप दिखाने के लिए कौन–सा विराम चिन्ह हैं	0
निर्देशक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है	संकेत के लिए

शब्द रचना

अक्षर

वह ध्वनि या ध्वनि समूह जिसका उच्चारण एक साँस या प्रयत्न में होता है, अक्षर कहलाता है।

शब्द

एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को 'शब्द' कहते हैं या निश्चित अर्थ को प्रकट करने वाले वर्ण–समूह को शब्द कहते हैं।

(i) रूढ़ शब्द : जो शब्द एक अर्थ विशेष या वस्तु विशेष के लिये प्रयुक्त हों या जो अपने मूल रूप में व्यवहार में लाये जायें।
जैसे : रोटी, फूल आदि। 'फूल कहते ही हमारे दिमाग में वह कोमल चीज, जो लुभावन है तथा सुगंध देती है, घूम जाती है।

(ii) यौगिक : वे शब्द जो दो या अधिक शब्दों के योग से बने हों, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं।
जैसे : हिम+आलय = हिमालय, प्रधान+मंत्री = प्रधानमंत्री।

(iii) योगरूढ़ : जो शब्द दो शब्दों के मेल से तो बने हैं परन्तु किसी अन्य अर्थ विशेष का बोध करवाते हैं तथा एक निश्चित अर्थ के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।
जैसे : चारपाई अर्थात् चार पाये हैं जिसके। यहाँ चारपाई का अर्थ खाट से है न कि गाय, या किसी जानवर से। इस प्रकार इन शब्दों में योग भी हुआ और निश्चित अर्थ रूढ़ भी हो गया।

(iv) समासरूढ़ शब्द : सामसिक शब्दों में भी कुछ शब्दों का अर्थ रूढ़ हो गया है, उन्हें 'समासरूढ़' शब्द कहते हैं। जैसेः दशानन। दशानन का अर्थ 'दशमुख वाला', पर यह शब्द केवल रावण के लिए प्रयुक्त होता है। पीताम्बर, नीलकण्ठ, षडानन, पंचानन आदि शब्द समास रूढ़ शब्द हैं।

(v) तत्सम : जो शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों ले लिए गये, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे–भूमि, प्रथम, राष्ट्र आदि।

(vi) तद्भव : संस्कृत से आए शब्दों से उत्पन्न हुए शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं अर्थात् जिन्हें हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप ढाल लिया गया।
जैसे : काम, बरस, माँ आदि।

(vii) आगत या विदेशी शब्दः जो शब्द किसी दूसरी भाषा से स्वीकार कर लिये गये, उन्हें आगत या विदेशी शब्द कहते हैं। जैसे : कैंची, बटन, तोप, कागज आदि।
कुछ तो ज्यों के त्यों ले लिये गए। जैसे : कागज, ऑफ़िस आदि।
कुछ को हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप ढाल लिया गया। जैसे : जमीन, त्रासदी आदि।

(viii) देशी शब्द : स्थानीय बोलियों या उपभाषाओं से आये क्षेत्रीय शब्द देशी या देशज शब्द कहे जाते हैं।
जैसे : ढूँढ़ना, खाट, आदि।

(ix) संकर शब्दः दो भाषाओं के मिश्रण से बने शब्द संकर कहलाते हैं।
जैसे : रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेजी) और गाड़ी (हिन्दी), जाँचकर्ता = जाँच (हिन्दी) और कर्ता (संस्कृत)।

व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द भेद

शब्दों को विकार की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है। ये इस प्रकार हैं:

विकारी शब्द		अविकारी शब्द	
1.	संज्ञा	5.	समुच्चयबोधक
2.	सर्वनाम	6.	क्रियाविशेषण
3.	विशेषण	7.	सम्बन्धबोधक
4.	क्रिया	8.	विस्मयादिबोधक

विकारी शब्द

जिन शब्दों का रूप–परिवर्तन होता रहता है वे विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे : अच्छा, अच्छाई, अच्छे।

इनमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया आते हैं।

संज्ञा

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के भेदों के संबंध में वैयाकरण इसके पाँच भेद मानते हैं। जो निम्नलिखित हैं:–

1. व्यक्तिवाचक
2. जातिवाचक
3. भाववाचक
4. समूहवाचक
5. द्रव्यवाचक

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे – राम, गाँधीजी, गंगा, काशी इत्यादि। 'गाँधीजी' कहने से एक व्यक्ति का, 'गंगा' कहने से एक नदी का और 'काशी' कहने से एक नगर का बोध होता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित रूपों में होती हैं –

1. व्यक्तियों के नाम – पवन, राजकुमार, विनोद, आदि।
2. दिशाओं के नाम – पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आदि।
3. देशों के नाम – भारत, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, म्यांमार, आदि।
4. राष्ट्रीय जातियों के नाम – भारतीय, रूसी, अमेरिकी, आदि।
5. समुद्रों के नाम – काला सागर, भूमध्यसागर, हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, आदि।
6. नदियों के नाम – गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, कृष्णा, कावेरी, सिंधु, आदि।
7. पर्वतों के नाम – हिमालय, विंध्याचल, अरावली, काराकोरम, आदि।
8. नगरों, चौकों और सड़कों के नाम – वाराणसी, गया, चाँदनी चौक, हरिसेन रोड, अशोका मार्ग, आदि।
9. पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम – रामचरितमानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, द हिंदू, आर्यावर्त, आदि।
10. ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम – पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही–विद्रोह, अक्तूबर–क्रांति, आदि।
11. दिनों, महीनों के नाम – मई, अक्टुबर, जुलाई, सोमवार, मंगलवार, आदि।
12. त्योहारों, उत्सवों के नाम – होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस, वैशाखी, आदि।

जातिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उन्हें 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे – 'मनुष्य, घर, पहाड़, नदी इत्यादि। 'मनुष्य' कहने से संसार की सभी मनुष्य–जाति का, 'घर' कहने से सभी तरह के घरों का, 'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का और 'नदी' कहने से सभी प्रकार की नदियों का जातिगत बोध होता है।

जातिवाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित स्थितियों की होती हैं–

1. संबंधियों, व्यवसायों, पदों और कार्यों के नाम – बहन, मंत्री, कारीगर, इंजीनियर, आदि।
2. पशु–पक्षियों के नाम – घोड़ा, गाय, कौआ, तोता, मैना, आदि।
3. वस्तुओं के नाम – मकान, कुर्सी, घड़ी, पुस्तक, कलम, टेबल, आदि।
4. प्राकृतिक तत्त्वों के नाम – तूफान, बिजली, वर्षा, ज्वालामुखी, आदि।

भाववाचक संज्ञा

जिस संज्ञा–शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध होता है, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे– लंबाई, बुढ़ापा, नम्रता, समझ, चाल इत्यादि। हर पदार्थ का एक गुण धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में नम्रता इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म पदार्थ से अलग नहीं रह सकता। घोड़ा है तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इंद्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

समूहवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो, उसे 'समूहवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे : व्यक्तियों का समूह – सभा, दल, गिरोह; वस्तुओं का समूह – गुच्छा, कुंज, मंडल, आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा से नाप–तौल वाली वस्तु का बोध हो, उसे 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहते हैं। इस संज्ञा का सामान्यतः बहुवचन नहीं होता। जैसे – लोहा, सोना, चाँदी, दूध, पानी, तेल, तेजाब, इत्यादि।

संज्ञा के रूपांतर

संज्ञा विकारी शब्द है। विकार शब्दरूपों को परिवर्तित अथवा रूपांतरित करता है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक चिह्नों (परसर्ग) के कारण बदलते हैं।

लिंग के अनुसार

पुरूष खाता है – स्त्री खाती है।

लड़का खाता है – लड़की खाती है।

इन वाक्यों में पुरूष पुल्लिग है और स्त्री स्त्रीलिंग। 'लड़का' पुल्लिग है और लड़की स्त्रीलिंग। इस प्रकार, लिंग के आधार पर संज्ञाओं का रूपांतर होता है।

वचन के अनुसार

लड़का खाता है – लड़के खाते हैं।

लड़की खाती है – लड़कियाँ खाती हैं।

एक लड़का जा रहा है – तीन लड़के जा रहे हैं।

इन वाक्यों में लड़का शब्द एक के लिए आया है और लड़के एक से अधिक के लिए। लड़की एक के लिए और लड़कियाँ एक से अधिक के लिए व्यवहृत हुआ है। यहाँ संज्ञा के रूपांतर का आधार वचन है। लड़का एकवचन और लड़के बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है।

कारक-चिह्नों के अनुसार

लड़का खाना खाता है – लड़के ने खाना खाया।

लड़की खाना खाती है – लड़कियों ने खाना खाया।

वाक्य में 'लड़का खाना खाता है', में लड़का पुल्लिग एकवचन है और लड़के ने खाना खाया में भी लड़के पुल्लिग एकवचन है, पर दोनों के रूप में भेद है। इस रूपांतर का कारण कर्त्ता कारक का चिह्न 'ने' है, जिससे एकवचन होते हुए भी लड़के रूप हो गया है।

इसी तरह, लड़के को बुलाओ, लड़के से पूछो, लड़के का कमरा, लड़के के लिए चाय लाओ, इत्यादि वाक्यों में संज्ञा (लड़का–लड़के) एकवचन में आई है। इस प्रकार, संज्ञा बिना कारक–चिह्न के भी होती है और कारक–चिह्नों के साथ भी। दोनों स्थितियों में संज्ञाएँ एकवचन में अथवा बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं।

उदाहरणार्थ :

बिना कारक चिह्न के

लड़के खाना खाते हैं। (बहुवचन)

लड़कियाँ खाना खाती हैं। (बहुवचन)

कारक चिह्नों के साथ

लड़कों ने खाना खाया।

लड़कियों ने खाना खाया।

लड़कों से पूछो।

लड़कियों से पूछो।

इस प्रकार, संज्ञा का रूपांतर लिंग, वचन और कारक के कारण होता है।

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष — हिन्दी: एक संक्षिप्त परिचय

1. भाषा की सार्थक लघुत्तम इकाई है:
(a) शब्द (b) पद
(c) ध्वनि (d) वाक्य

2. इनमें से कौन व्यंजन अल्पप्राण है?
(a) ख (b) थ
(c) क (d) फ

3. इनमें से कौन सा वर्ण स्पर्श व्यंजन नहीं है?
(a) क (b) च
(c) य (d) ट

4. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन–सी दंत्योष्ठ्य है?
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व

5. निम्नलिखित वर्गों में से कौन सा मूर्धन्य ध्वनियों का है?
(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ
(c) प, फ, ब, भ (d) त, थ, द, ध

6. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान है:
(a) मूर्धन्य (b) तालव्य
(c) दन्त्य (d) ओष्ठ्य

7. निम्नलिखित में से कौन एक संयुक्त व्यंजन नहीं है?
(a) क्ष (b) ष
(c) त्र (d) ज्ञ

8. 'य, र, ल, व' किस वर्ग के व्यंजन हैं?
(a) तालव्य (b) ऊष्म
(c) अन्तःस्थ (d) ओष्ठ्य

9. 'सलमा घर जाती है' वाक्य है:
(a) सरल वाक्य (b) निषेधात्मक वाक्य
(c) आज्ञार्थक वाक्य (d) इच्छार्थक वाक्य

10. 'मेरा मित्र राकेश बहुत अच्छा चित्रकार है'– इस वाक्य में विभेद है:
(a) मेरा मित्र (b) चित्रकार
(c) बहुत अच्छा चित्रकार (d) बहुत अच्छा

11. अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?
(a) 3 (b) 4
(c) 5 (d) 6

12. अविकारी शब्द क्या होता है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) अव्यय (d) विशेषण

13. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन–सा है?
(a) आज (b) लड़का
(c) इधर (d) परन्तु

14. निम्नलिखित में संकर शब्द कौन–सा है?
(a) आतिशबाजी (b) लफंगा
(c) नारिकेल (d) चुगलखोर

15. निम्नलिखित में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए–
(a) आप बताएं कि आपकी समस्या क्या है?
(b) मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
(c) उसने खाना खाया और सो गया।
(d) परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

16. 'राकेश पढ़ता है।' यह कैसा वाक्य है?
(a) साधारण वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

17. इनमें से संयुक्त वाक्य को पहचानिए–
(a) राम पुस्तक पढ़ रहा है।
(b) शिल्पी पत्र लिखती है।
(c) धर्मेन्द्र ने भोजन किया।
(d) वह सुबह गया और शाम को लौट आया।

18. 'यदि परिश्रम करोगे तो, उत्तीर्ण हो जाओगे।' किस प्रकार का वाक्य है?
(a) सरल वाक्य/साधारण वाक्य
(b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित/मिश्र वाक्य
(d) इनमें से कोई नहीं

37. संयोजक चिन्ह (–) को किस अन्य नाम से जानते है?
(a) सामासिक चिन्ह
(b) कोष्ठक
(c) अवतरण चिन्ह
(d) इनमें से कोई नहीं

38. भूल सुधारने अथवा शब्द में किसी त्रुटि को सही दिखाने के लिए किस कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है?
(a) ( ) (b) [ ]
(c) { } (d) इनमें से कोई नहीं

39. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
(a) वे शब्द जिनसे भाव का बोध होता है।
(b) वे शब्द जिनसे किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान का बोध होता है।
(c) दोनों (a) और (b)
(d) इनमें से कोई नहीं

40. जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के गुण, दोष, दशा आदि का ज्ञान हो, उसे क्या कहते हैं?
(a) व्यक्तिवाचक संज्ञा (b) भाववाचक संज्ञा
(c) जातिवाचक संज्ञा (d) दोनों (a) और (b)

41. निम्न में से पुरूषवाचक सर्वनाम है:
(a) उस (b) वह
(c) यह (d) तुम

42. प्रश्नवाचक सर्वनाम का उदाहरण है
(a) तब (b) जब
(c) किन्हें (d) वो

43. निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण नहीं है:
(a) अपनी (b) अपने आप
(c) स्वयं (d) मेरा

44. मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम का बहुवचन है
(a) तुझे (b) तेरे
(c) तुझमें (d) तुम्हें

45. किस विकल्प में सर्वनाम का संबंधकारक प्रयुक्त हुआ है?
(a) तेरा (b) आपने
(c) उन्हें (d) उसके

46. 'उसका भाई खेलता है' वाक्य में सर्वनाम है:
(a) निजवाचक (b) पुरूषवाचक
(c) संबंधवाचक (d) निश्चयवाचक

47. 'कोई जुते चुरा रहा है' वाक्य में सर्वनाम है:
(a) निश्चयवाचक (b) निजवाचक
(c) संबंध वाचक (d) अनिश्चयवाचक

48. निम्नलिखित में से कंठ्य ध्वनियों कौन–सी है?
(a) क, च (b) य, र
(c) च, ज (d) ट, ण

49. निम्नलिखित में से उच्चारण–स्थान के आधार पर मूर्द्धन्य व्यंजन बताइए:
(a) ग, घ (b) ज, झ
(c) ड, ढ (d) प, फ

50. निम्नलिखित में से एक वर्ण व्यंजन नहीं है:
(a) उ (b) ख
(c) र (d) य

उत्तरमाला ➤ हिन्दी: एक संक्षिप्त परिचय

1. (c)	2. (c)	3. (c)	4. (d)	5. (b)	6. (b)	7. (b)	8. (c)	9. (a)
10. (d)	11. (b)	12. (c)	13. (b)	14. (d)	15. (c)	16. (a)	17. (d)	18. (c)
19. (c)	20. (d)	21. (a)	22. (b)	23. (c)	24. (b)	25. (b)	26. (c)	27. (c)
28. (c)	29. (c)	30. (d)	31. (d)	32. (a)	33. (d)	34. (b)	35. (b)	36. (d)
37. (a)	38. (b)	39. (b)	40. (b)	41. (a)	42. (c)	43. (d)	44. (a)	45. (a)
46. (b)	47. (d)	48. (a)	49. (c)	50. (a)				